डा. निर्भय कुमार
वरिष्ट गुर्दा रोग विशेषज्ञ
tusharsmile@rediffmail.com.

गुर्दाप्रत्यारोपण कब और किसके लिए

गुर्दा प्रत्यारोपण, गुर्दे की कोनिक बीमारी की अन्तिम स्टेज का सबसे सफल उपचार है। ऐसे रोगी जिनके दोनों गुर्दो का कुल कार्य स्थाई तौर पर १५ प्रतिशत से कम हो गया हो उन्हें इस स्टेज में रखा जाता है। इस स्टेज को चिक्तसीय भाषा में चरम स्टेज किडनी रोग (ई.एस. आर.डी.) कहा जाता है। इस स्थिति में आने पर रोगी को स्वस्थ जीवन जीने के लिये डायेलिसिस या गुर्दा प्रत्यारोपण की आवश्यकता पडती है।

कौन है उचित रोगी गुर्दा प्रत्यारोपण के लिए

१. रोगी की आयु ६० वर्ष तक होनी चाहिए। अधिक आयुवर्ग में भी यदि रोगी किसी और रोग से ग्रसित नहीं है तो प्रत्यारोपण किया जा सकता है।
२. रोगी को शल्य चिक्तसा के समय किसी भी तरह के संकमण से मुक्त होना चाहिए ।
३. रोगी में कैंसर का वर्तमान में या पूर्व में कोई प्रमाण नहीं होना चाहिये।
४. रोगी को यूरीनरी ब्लैडर या मूत्र मार्ग (यूरीश्रा) का जटिल रोग नहीं होना चाहिए।

यहॉ तक बताना उपयुक्त होगा कि मधुमेह के कारण हुऐ गुर्दारोग में भी गुर्दा प्रत्यारोपण किया जा सकता है।

कौन हो सकता है गुर्दा दाता

सामान्यताः १८ वर्ष से ६० वर्ष के बीच का स्वस्थ व्यक्ति अपना गुर्दा दान कर सकता है। उसके लिये निम्न बातें आवश्यक हैं।

१. वह रोगी का रक्त सम्बन्धी या पारिवारिक मित्र होना चाहिए।
२. उसका ब्लड गुप और टिशू टाईपिंग रोगी से मैच करना चाहिऐ। दाता का ब्लड गुप्र ओ पाजिटिव है या रोगी के ब्लड गुप्र का ही है तो वह गुर्दा दान कर सकता है।
३. उसके दोनों गुर्दे पूर्णतः स्वस्थ होने चाहिये।
४. गुर्दा दाता को किसी भी तरह के शारीरिक या मानसिक रोग से मुक्त होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

क्या होता है गुर्दा प्रत्यारोपण

गुर्दा प्रत्यारोपण में एक स्वस्थ गुर्दादाता का एक गुर्दा बॉया या दॉया खुली शल्य चिकित्सा या लैप्रोस्कोपी विधि से निकाल कर उसमें कम तापमान वाले द्रव को प्रवाहित करते हैं। इसके बाद इसे रोगी (गुर्दा प्राप्त करने वाले) के शरीर में पेट के दाये या बाये हिस्से में सीपित कर दिया जाता है। इस नये गुर्दे की रक्त वाहिनीयों को रोगी की रक्त वाहिनायों से जोड़ देते हैं। गुर्दे की मूत्र वाहिनी (यूरीटर) को रोगी के मसाने (यूरीनरी बलैडर) के सीधे जोड़ दिया जाता है। प्रायः रोगी के शरीर में नया गुर्दा तुरन्त कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। शल्य चिक्तसा के दौरान कुछ खास दवाअें दी जाती हैं, जिससे प्रत्यारोपित गुर्दा वहिष्कृत (रिजेक्ट) न हो जाये।

गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद

गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद गुर्दा दाता एक हफ्ते बाद हस्पताल से मुक्त हो जाता है और उसे इसके बाद किसी दवा की जरूरत नहीं पडती है वह अपना कार्य सामान्य ढंग से करता रहता है।

गुर्दा प्रत्यारोपित रोगी को जीवन पर्यनत कुछ खास औषधियों का प्रयोग करना पडता है, जिससे लगाया गया नया गुर्दा वहिष्कृट न हो जाये इन औषधियों की मात्रा धीरे-धीरे कम होती जाता है। उसे संकमण, उच्च रक्तचाप और रक्त में वसा संबन्धी समस्याओं के लिये विशेष सावधानीयॉ बरतनी पड़ती है। आजकल नयी प्रभावी दवाओं के आ जाने से गुर्दा प्रत्यारोपण की सफलता ९७ प्रतिशत हो गयी है।

Scanned with CamScanner